प्रमुख महिला लेखीकाओं की आत्मकथाएँ और नारी विमर्श

डॉ.श्रीदेवी बाबुराव बिरादार

हिंदी साहित्य जगत में 'आत्मकथा' ऐसी विधा है जिसे आज पूर्ण रूप में महत्ता प्राप्त हुई है। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में महिला साहित्यकारों ने भी अपने प्रतिभा का परिचय देते हुए आत्मकथा साहित्य लेखन में अपना अलग स्थान बनाया है। उन्नीसवी सदी की बौद्धिक चेतना के प्रतिफल के रूप में भारतीय भाषाओं में स्त्रियों और दलितों ने आत्मकथा लिखी है। पितृसत्ताक समाज के मूल्यों ने नारी को एक विशेष साँचे में ढाला और साहित्य में वही छवि अंकित हुई। नारी को बचपन से ही उसी छवि को आदर्श मानकर चलने की शिक्षा दी गई। मगर नई कहानी आंदोलन के साथ जिन महिला कथा लेखिकाओं के नाम उभरे उनमें एक परिवर्तित दृष्टि रही है। वे नारी के अधिकारों एवं पुरातन जर्जर मूल्यों से उसकी मुक्ति की बात करने में पूर्णतः समर्पित है। कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, मन्नू भंडारी, शशिप्रभा शास्त्री, मैत्रेयी पुष्पा, राजी सेठ, कुसुम अंसल, कृष्णा अग्निहोत्री आदी अनेक लेखिकाओं ने स्वाभाविक प्रकृति को उभारने में किसी प्रकार का संकोच नहीं किया है।

"मनुष्य के द्वारा व्यक्त की गई स्वयं की कहानी ही आत्मकथा है।"[१] आत्मकथा याने किसी व्यक्ति की स्वलिखित जीवनी है। अपने जीवन में घटित सभी घटनाओं को पाठकों के सामने रखना आसान बात नहीं है, उसमें भी परंपरा से घिरे भारतीय नारी जीवन की निर्मम परंपराएँ है। स्वयं के जीवन को स्वयं के कलम द्वारा स्वयं को खोलकर रखना इतना सहज नहीं है। इसलिये अब तक लेखिकाओं की आत्मकथाएँ ना के बराबर थी मगर आज आत्मनिर्भर आधुनिक नारी प्रखर नारीवादी चेतना के कारण भय, लज्जा और लोकोपवाद से अप्रभावित रह लेखिकाओं ने स्वयं के जीवन की कथा आत्मकथा के रूप में पाठकों के सामने रखी है।

हिंदी में पहली स्त्री आत्मकथा 'सरला : एक विधवा की आत्मजीवनी' का प्रकाशन १९१५-१६ में रहा है। जिसकी लेखिका कोई सरला नामक बाल विधवा है। 'सीमन्तनी उपदेश' १९८२ ई. जिसकी लेखिका के निजी और आत्मीय प्रसंगों की भरमार है। सन् १९५६ में प्रकाशित जानकीदेवी बजास की 'मेरी जीवन यात्रा' एक अद्भूत आत्मकथा है।

१९८७ में लिखी अजीम कौर की 'खानाबदोश' आत्मकथा है। आठ शीर्षकों के माध्यम से अपनी जिंदगी का भोगा सच वर्णित है। आत्मकथा के शुरुवात में ही लेखिका ने कहा है-"दर्द की जिंदगी का आखरी सच है। दर्द और अकेलापन आप न दर्द साझा कर सकते है न अकेलापन।"[२] अजीत कौर जी ने जिंदगी में ऐसी यातनाओं को भोगा है कि पाठक के रोंगटे खडे हो जाते है।

प्रतिभा अग्रवाल

नाटक एवं रंगमंच के लिए समर्पित जीवन जीनेवाली प्रतिभा अग्रवाल की आत्मकथा 'दस्तक जिंदगी की' (१९९०) और 'मोड जिंदगी का'(१९९६) दो भागों में विभाजित प्रकाशित है। डॉ. प्रतिभा अग्रवाल की आत्मकथा उनके बचपन, घर-परिवार से संबंधित सुखद, दुःखद अनुभवों का लेखा-जोखा नहीं बल्कि एक नारी के आत्मविश्वासपूर्ण अभ्युदय एवं उत्थान की कथा है। यह आत्मकथा अपने समय की नारी सामर्थ्य का बोध कराती है। यह आत्मकथा ही नहीं रंगमंच का इतिहास और नाट्यशास्त्र भी है।

कुसुम अंसल

कुसुम अंसल की 'जो कहा नहीं गया' नामक आत्मकथा १९९६ में प्रकाशित है। जिसके अमुख में ही लेखिका ने कहा है-"मेरा यह लेखन मेरी वह यात्रा है जिसमें प्रवाहित होकर मैं लेखिका बनी थी, मेरी उन अनुभवों का कच्चा-चिट्ठा जिनको अपने प्रति सचेत होकर मैंने रचनात्मक क्षणों में जिया था।"[३] लेखिका लिख तो अपने बारे में रही है, किंतु उसे आत्मकथा न कहकर जीवन की सपाट बयानी कहती है। जीवनपरक आत्मकथा के माध्यम से भले ही पाठकीय संभावनाओं को पुरा कर पाने में सक्षम न रही हो किंतु एक परिश्रमी, शिल्पकार और सृजनकर्ता के रूप में अवश्य सफल हुई है।

कृष्णा अग्निहोत्री

कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नहीं है दिल मेरा' आत्मकथा सन १९९७ में प्रकाशित रही है। यह आत्मकथा पुरुष निर्मित पितृसत्तात्मक नैतिक प्रतिमानों की धज्जियाद्द उडाकर रखती है। साथ ही लिंगभेद की पक्षपात पूर्ण नीति के दुष्परिणामों की ओर संकेत करती है। सुंदर स्त्री के प्रति कामुक पुरुषों की दूषित निगाहें उसके जीवन को संकटग्रस्त बनाती है। हिंदी लेखिका का जीवन निष्कलंक और सुखदाई नहीं है। पुरुष का अहं उसके पथ की दीवार है। 'और...और...औरत' आत्मकथा का दूसरा भाग सन् २०१० में प्रकाशित रहा है। आत्मकथा पर अश्लील होने और आत्मप्रचार का साधन होने के आरोपों का खंडन किया गया है। निरंतर संघर्ष

करके जीवनेवाली लेखिका का स्वजीवन के प्रति अंतिम निष्कर्ष निराशाजनक है-''संसार की रंगीन गलियों और खुशी के चौराहे से गुजरने की मेरी नियति नहीं रही। शायद इसीलिए औरत के भीतर की शैन शैने समाप्त होती जा रही है।''[३] कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा पुरुष अहं और स्वार्थ से पीडित नारी की कांटो भरी जिंदगी की दास्तान है। इसमें ऐसी नारी का व्यक्तित्व उभरता है जो हर प्रकाशमान वस्तु को सितारा समझ लेती है। और पास आते ही नग्न यथार्थ है। धोखा खाकर फिर धोखा खाती है। अपने शून्य को भरने के प्रयास में उसे और अधिक असीम कर लेती है।

कौसल्या बेसंत्री

कौसल्या बेसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' इ.स. १९९९ में प्रकाशित आत्मकथा है। उन्होंने शरदकुमार लिंबालकर की ही भाँति अस्पृश्य समाज में जीनेवाली नारी की करुण गाथा को प्रस्तुत किया है। लेखिका स्वयं दलित समाज में पैदा हुई है और जो कुछ भी पीडा इन्हें इससे उठानी पडी उसीका यथार्थ चित्रण किया है।

मैत्रेयी पुष्पा

मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तुरी कुंडल बसै' सन् २००८ में प्रकाशित आत्मकथा है। जिसे आत्मकथात्मक उपन्यास कहा है। स्वयं लेखिका लिखती है-''यही है हमारी कहानी। मेरी और मेरी माँ की कहानी। आपसी प्रेम, घृणा, लगाव और दुराव की अनुभुतियायों से रची कथा में बहुत सी बाते ऐसी है, जो मेरे जन्म के पहले ही घटित हो चुकी थी।''[५] मैत्रेयी के अनुसार आज भी भारतीय समाज में नारी मात्र वस्तु और मनोरंजन का साधन बनी हुई है। उनका कहना है कि समाज की किसी भी बुराई का अंत यदि करना है तो शिक्षा आवश्यक है। यही शिक्षा उनकी आत्मकथा देती है। इसी आत्मकथा का दूसरा भाग 'गुडिया भीतर गुडिया' सन २००८ में प्रकाशित रहा है जो लेखिकाओं का रचनात्मक संघर्ष है।

प्रभा खेतान

उपन्यास लेखिका प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अन्यन्या' सन २००७ में प्रकाशित है। अपने आयु से दुगने विवाहित पाँच संतानों के पिता डॉ.सर्राफ के प्रेम में लेखिका फँसती है। पिता की मृत्यु पश्चात नौ साल की आयु से माँ की उपेक्षा ने उन्हें अकेला किया था। पिता के प्रभाव की क्षतिपूर्ति डॉ.सर्राफ के रूप में हुई थी। ''डॉक्टर साहब मेरे लिए सुरक्षा के प्रतीक थे मानो उनके लिए मैं जिंदा थी, उनको कुछ हो जाए, ऐसा मैं सोच भी नहीं पाती। डॉक्टर साहब मेरे लिए बरगद की छाँव थी।''[६] डॉक्टर के साथ प्रेम करने के कारण लेखिका ने आजीवन बदनामी सही है। स्त्री को लेकर समाज की निष्ठुरता, क्रुरता का चित्रण आत्मकथा में रहा है।

मन्नु भंडारी

मन्नु भंडारी की 'एक कहानी यह भी' नामक आत्मकथा सन २००७ में प्रकाशित रही। अपनी शालीनता और सुसंस्कृत रुचि के चलते उन्होंने अपने जीवन की प्रमुख घटनाओं को ही लिया है। 'हंस' के संपादक और कथाकार राजेंद्र यादव से उन्होंने पिता विरोध के बाद भी प्रेम विवाह किया था। गृहस्थी की जिम्मेदारियों से पलायन करनेवाले अहंमग्रस्त पति के अमानवीय व्यवहार से दुःखी लेखिका ने तीस वर्ष के लंबे अरसे बाद संबंध विच्छेद किया। इस दुःख यातनापूर्ण स्थिति को आत्मकथा में वर्णित किया है।

चंद्रीकरण सौनरेक्सा

चंद्रीकरण सौनरेक्सा की 'पिंजरे की मैना' नामक आत्मकथा सन २००८ में प्रकाशित रही है। पति के ईर्ष्यालू, क्रोधी, विकृत मनोवृत्ति के कारण लेखिका ने लेखन कार्य को बंद किया था। बेटे के आग्रह पर आत्मकथा का लेखन कार्य किया। लेखिका के पति क्रांतिचंद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिंदी-अंग्रेजी के श्रेष्ठ अनुवादक, एक पत्रकार, समीक्षक, छायाकार थे फिर भी लेखिका के प्रति पुरुषी अहम् सदा रहा।

निष्कर्ष

प्रस्तुत आत्मकथाओं से स्पष्ट होता है कि आधुनिक काल में नारी मुक्ति का यह आयाम आत्मकथा लेखन है। स्वातंत्र्योत्तर काल में स्त्री साहित्यकारों ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए आत्मकथा साहित्य लेखन में अपना अलग स्थान बनाया है। पुरुषप्रधान देश में जहाँ नैतिकता के आधार पर नारी पर अनेक बंधन होते हुए भी वह सभी बंधनों को तोडकर अपने आपको खोलकर लेखनकार्य कर रही है। नारी मुक्ति का अर्थ पुरुषों से दूर रहना नहीं है, पुरुष और स्त्री दोनों मिलकर एक ही स्तर पर रहे। स्त्री को भी स्त्री के रूप में न देखकर एक आदमी के रूप में देखे तभी नारी मुक्ति संभव है।

संदर्भ

१) काव्यशास्त्र : विविध आयाम-मधू खराटे, पृ.१०७
२) हिंदी आत्मकथा स्वरूप विवेचन और विकासक्रम-डॉ. सविता सिंह, पृ.१०१
३) जोकटा नहीं गया-कुसुम अंसल, पृ.१३
४) और...और...औरत-कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.१५६
५) कस्तुरी कुंडल बसै-मैत्रेयी पुष्पा, पृ.७६
६) अन्या से अन्यन्या-प्रभा खेतान, पृ.१४